वंदे मातरम्
# राष्ट्र सेविका समिति
:: प्रधान कार्यालय ::
देवी अहल्या मंदिर, धंतोली, नागपुर - 440012
दूरभाष : 0712-2442097

वार्ता

वर्ष : 25 अंक : 67 युगाब्द : 5125 दिनांक :10 जुलाई 2023

## लो प्रणाम कोटि करों का
## कृतज्ञता से करते वंदन...

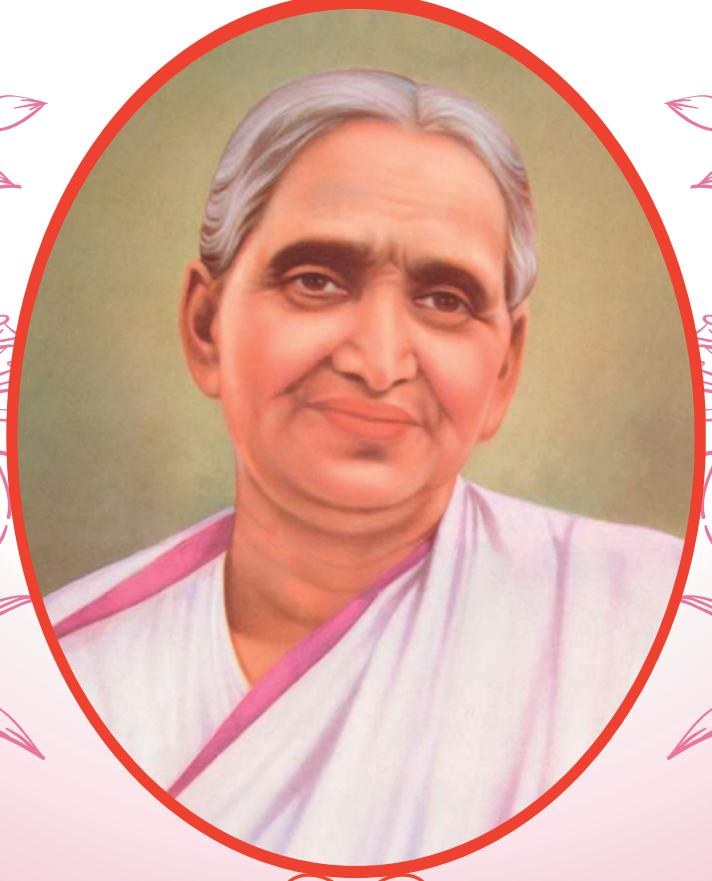

## वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य 'मौसी जी'

# संकल्प दिवस विशेषांक

# असाधारण प्रतिभा की धनी व कुशल संगठक – लक्ष्मीबाई केलकर

## संस्थापिका व आद्य संचालिका (राष्ट्र सेविका समिति) जन्मदिवस (संकल्प दिवस) पर विशेष

आद्य प्रमुख संचालिका वंदनीय लक्ष्मीबाई केळकर

13 अगस्त, 1947, जब देश में चारों और भय, चिंता, अविश्वास व दंगों का माहौल था तब दो अत्यंत साहसी और तेजस्वी महिलाएं लक्ष्मीबाई (मौसी जी) और वेणु ताई कराची हवाई अड्डे पर उतरीं। हवाई यात्रा में पुरुषों के बीच केवल यही दो महिलाएं थी। 14 अगस्त, 1947 को कराची के एक घर की छत पर 1200 से भी अधिक महिलायें एकत्रित हुई और मौसी जी ने उन सबके दुख को देखते हुए उन्हें धैर्यशील बनने, संगठन पर विश्वास रखने और मातृभूमि की सेवा का व्रत जारी करने का प्रण दिलवाया साथ ही साथ इन बहनों को यह आश्वासन भी दिया कि आपके भारत आने पर आपकी सभी समस्याओं का समाधान किया जाएगा और जब वे महिलाएं हिंदुस्तान आई तो मौसी जी ने मुंबई के कई परिवारों में गोपनीयता रखते हुए उनका संरक्षण भी किया।

14 अगस्त वो दिन था जब पाकिस्तान अपना पहला स्वतंत्रता दिवस मना रहा था और पूरे देश में हिंदुओं का कत्लेआम जारी था, हिन्दू महिलाएं अपने सम्मान की रक्षा के लिए अत्यंत भयभीत थीं। महिलाओं के बलात्कार और अपमान की भयावह कहानियां रोज सामने आ रही थीं ऐसे डरावने माहौल में राष्ट्र सेविका समिति की ये 2 निर्भीक नेत्री कराची में हिन्दू महिलाओं को ढांढस बंधा रही थी। मौसीजी यानि लक्ष्मीबाई केलकर ने 11 साल पहले ही राष्ट्र सेविका समिति संगठन की स्थापना की थी। देश की आजादी के समय ये संगठन अभी अपनी शुरुआती अवस्था में ही था, पर इसकी संस्थापिका के पास बड़ा दृष्टिकोण था। उत्तरोत्तर बढ़ने वाले और चिर स्थायी संगठन अवश्य ही संस्थापक की दूरदर्शिता और उसके उत्तराधिकारियों के समर्पण और योग्यता का परिणाम होते हैं। भारतीय राष्ट्र की निस्वार्थ सेवा में पिछले 87 वर्षों से समर्पित राष्ट्र सेविका समिति भी एक ऐसा ही संगठन है जो महिलाओं द्वारा स्थापित तथा संचालित है और राष्ट्र निर्माण में सतत् कार्यरत है।

राष्ट्र सेविका समिति जैसे महान संगठन की नींव रखने वाली गरिमामयी व आलौकिक व्यक्तित्व की स्वामिनी लक्ष्मीबाई केलकर जी जिन्होंने मातृशक्ति को राष्ट्र कार्य के लिए प्रेरित किया और एक ऐसे संगठन की स्थापना की जो आज विश्व का सबसे बड़ा महिला संगठन है। महिलाएं केवल परिवार निर्मात्री ही नहीं अपितु राष्ट्र निर्मात्री भी हैं। महिलाओं में राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना जागृत करने वाली महिला लक्ष्मीबाई केलकर ने पूजनीय डॉक्टर हेडगेवार जी से भेंट की जिन्होंने पूर्वोत्तर (1925) में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की थी। लक्ष्मीबाई केलकर ने उनके समक्ष अपना विचार रखा कि अगर पुरुष राष्ट्र उत्थान के कार्य के लिए सजग हो सकते हैं तो राष्ट्र कार्य का उत्तरदायित्व नारी का भी हो। कन्या, भगिनी, पत्नी, माता के रूप में जैसे नारी परिवार को एक सूत्र में बांधती है अगर वही दुर्बल होगी तो समाज कैसे सबल होगा इसलिए महिलाओं को भी मानसिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक सामर्थ्य बढ़ाकर राष्ट्रहित में अपने कर्तव्यों का वहन करना चाहिए। इसी उद्देश्य की साधना हेतु अपना स्वत्व समष्टि के लिए समर्पित करने वाली शीलवान, बलवान सेविकाओं का निर्माण हो जो राष्ट्रहित में समर्पित हों। उनके विचारों से प्रभावित होकर डॉ. हेडगेवार जी की सलाह पर एक स्वतंत्र महिला संगठन की स्थापना हुई जिसे आज हम सभी 'राष्ट्र सेविका समिति' के रूप में जानते हैं। यह विश्व का भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखने का काम करने वाला सबसे बड़ा महिला संगठन है। राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका लक्ष्मीबाई केलकर आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं।

ममतामयी लक्ष्मीबाई केलकर का जन्म आषाढ़ शुक्ल दशमी के दिन 6 जुलाई, 1905 को नागपुर में हुआ। तेजस्वी बालिका को देखते ही डॉक्टर ने बालिका का नामकरण कर दिया और नाम दिया गया कमल। बालिका कमल के माता-पिता भास्कर राव दाते व यशोदाबाई तन-मन-धन से सामाजिक कार्यों में लगें थे।

शिक्षित, जागरूक कमल ने दहेज प्रथा का विरोध किया और समाज के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया तथा बिना दहेज के विवाह का अपने माता-पिता के समक्ष आग्रह रखा। कमल का विवाह वर्धा के प्रसिद्ध अधिवक्ता पुरुषोत्तम राव से हुआ। विवाह के पश्चात कमल का नामकरण हुआ लक्ष्मी। विवाह के लगभग 12 वर्षों बाद ही तपेदिक की लाइलाज बीमारी के कारण पति का देहांत हो गया। मात्र 27 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी विधवा हो गई। पति के निधन के पश्चात दो बेटियों और छह बेटों की जिम्मेदारी, पारिवारिक दायित्व को निभाते हुए भी लक्ष्मी की कांग्रेस की प्रभात फेरियों, पिकेटिंग आदि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी थी। गांधी आश्रम में प्रार्थना में गांधी जी ने एक बार कहा था कि सीता के जीवन में राम-राम बने इसलिए महिलाओं को अपने समक्ष सदैव सीता का आदर्श रखना चाहिए। इसी विचार के चलते लक्ष्मी ने रामायण का अध्ययन किया।

समाज में नारी शोषण, अत्याचारों के समाचारों के कारण लक्ष्मी की सोच में परिवर्तन आया। महिलाएं आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास जैसे गुणों से ही अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों का विरोध कर सकती हैं उनमें यह विचार घर करने लगा। बंगाल के समाचारों (स्नेह लता, कुसुम बाला) ने इस आग को और भड़का दिया था। लक्ष्मी के पुत्र मनोहर व दिनकर ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाना प्रारम्भ किया। उनके जीवन में आए परिवर्तनों को देखकर इन के मन में भी

इसी प्रकार के महिला संगठन की आवश्यकता का विचार आया और वे डॉ. हेडगेवार जी से मिलीं। डॉक्टर हेडगेवार जी उनके संयमित व्यवहार, निर्भीकता, संकल्प और महिलाओं के प्रति उनके जुनून से अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्होंने संगठन की स्थापना की स्वीकृति प्रदान की। इस प्रकार राष्ट्र सेविका समिति की नींव पड़ी। इस संगठन की विचारधारा पुरुषों के संगठन के समान किंतु समानांतर थी और यह एक स्वतंत्र संगठन था।

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना वर्धा में विजयदशमी के दिन 1936 में हुई।

अब यक्ष प्रश्न यह भी था कि महिलाओं को एक संगठन की छत के नीचे लाकर ऐसा क्या सिखाया जाए जिससे कि वे राष्ट्र धर्म के कार्य में जुट जाए, समिति के लिए योजनाएं बनने लगीं। वे महिलाओं से प्रतिदिन निश्चित समय पर मिलने लगीं ताकि महिलाएं सुशीला, सुधीरा, समर्था बनें व उनके हृदय में हिंदुत्व का भाव जगे। महिलाओं को सैनिक पद्धति के अनुसार शाखा में प्रशिक्षण दिया जाने लगा। लक्ष्मीबाई केलकर जी ने समिति की शाखाओं की बहनों से संपर्क हेतु साइकिल चलाना, भाषण देना, भाषण देने के लिए भी लगातार विषयों का गहन अध्ययन कर महत्वपूर्ण बिंदु निकालना व प्रभावी भाषा में लगातार बोलने का अभ्यास शुरु किया। इसी अभ्यास ने उन्हें एक अच्छा वक्ता बना दिया। स्वास्थ्य के महत्व को जानते हुए 1953 में उन्होंने 'स्त्री जीवन विकास परिषद्' का आयोजन कर डॉक्टरों को एकत्र कर परिचर्चा आयोजित की। योगासन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण होगा इसी कारण समिति शिक्षा वर्ग में योगासन का समावेश किया गया। एक आदर्श सेविका कैसी हो? इस विचार पर भी लगातार चिंतन मनन कर स्पष्ट रूपरेखा तैयार की। समिति शाखा स्थान पर अनुशासित होकर व्यायाम, योग, दंड, छुरिका, नियुद्ध आदि की शिक्षा दी जाने लगी। खेलों का समावेश भी शाखा में किया जाने लगा क्योंकि खेलों के माध्यम से बहनों में आध्यात्मिक मन, शौर्य, साहस, धैर्य, देशभक्ति का निर्माण होता है। सुदृढ़ शरीर में तेजस्वी मन का निर्माण होता है इसलिए बौद्धिक विकास के विभिन्न कार्यक्रम भी शाखा में करवाए जाते हैं ताकि समिति की सेविकाओं में भारतीय संस्कृति, इतिहास, धर्म और अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त हो सके।

राष्ट्र भाव सेविकाओं के अंतस में बसा महान भाव है इसलिए देश पर कभी भी प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप रहा हो (बाढ़, भूकंप, अकाल, तूफान, सुनामी व युद्ध काल) की विपरीत परिस्थितियों में भी समिति सेविकाओं ने धन, वस्त्र, दवाईयां, प्राथमिक चिकित्सा सभी रूपों में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। आज राष्ट्र सेविका समिति अनेक शिक्षण संस्थाएं, सिलाई केन्द्र, योग केन्द्र, औषधालय, आदिवासी छात्राओं के लिए छात्रावास, भजन मंडल आदि भी चला रही हैं।

वर्तमान में राष्ट्र सेविका समिति भारतीय महिलाओं का सबसे बड़ा और सुदृढ़ संगठन है जिसकी शाखाएं पूरे भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी फैली हुई है। भारत के 2380 शहरों, कस्बों और गांवों में समिति की 3000 शाखाएं चल रही हैं। समिति के 400 सेवा प्रकल्प चल रहे हैं। दुनिया के 16 देशों में समिति की सशक्त उपस्थिति दर्ज हो चुकी है।

सेविका समिति सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक धरातल पर 1936से काम कर रही है। शाखाओं के माध्यम से समिति की सेविकाएं (सदस्य) समाज और देश के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

वंदनीय मौसी जी लक्ष्मीबाई केलकर ने एक ऐसे स्वप्न को साकार किया जिसे उन्होंने खुली आंखों से देखा था और आज विश्व के शक्तिशाली संगठनों में से एक राष्ट्र सेविका समिति की धमक पूरे विश्व में फैली है। प्रफुल्लित मुख, गरिमामयी व प्रेरक व्यक्तित्व की स्वामिनी, वीरांगना, ऊर्जावान, कर्मठ, दृढ़ निश्चयी, साहसी व आत्मविश्वास से भरपूर वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर आद्य संस्थापिका, राष्ट्र सेविका समिति, केवल एक नाम ही नहीं है अपितु वे अपने आप में एक संस्था हैं। राष्ट्र सेविका समिति संगठन की स्थापना का दृढ़ निश्चय कर समिति रूपी वृक्ष को लगातार घना, छायादार सघन, फल-फूल से परिपूर्ण बनाने में जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया ऐसी प्रातः स्मरणीय, वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर से आज पूरा भारत ही नहीं अपितु विदेश में रहने वाले भारतीय भी परिचित हैं। जिन्होंने केवल भारत ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों में रहने वाली सैकड़ों महिलाओं में हिंदुत्व की अलख जगाई।

*साभार - डॉ. सुनीता शर्मा (लेखिका व शिक्षाविद्)*

## वन्दनीय लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी) जीवनयात्रा

**जन्म** - 6 जुलाई 1905, आषाढ़ शुक्ल नवमी; **विद्यालय प्रवेश** - 1911; **विवाह** - जुलाई 1919; **पहले पुत्र मनोहर का जन्म** - 1920; **पति पुरुषोत्तम राव केलकर की मृत्यु** - 6 जुलाई 1932; **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी से विचार विमर्श** - 1934-1935; **राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना** - 1936 विजयादशमी; **महाराष्ट्र व महाराष्ट्र के बाहर समिति का विस्तार** - 1936 से 1942; 15 अगस्त 1947 देश विभाजन की विभीषिका के समय मौसी जी का पाकिस्तान कराची मे **1200 सेविकाओं से भेंट**; महात्मा गाँधी जी की हत्या व **संघ पर प्रतिबंध**। **समिति कार्य स्थगित** - 30 जनवरी 1948; **राष्ट्र स्वयंसेवक संघ से प्रतिबंध हटा** - 1949; **समिति कार्य की पुनः शुरुआत एवं रामायण पठन** - 1950; **भारतीय स्त्री जीवन विकास परिषद और गृहिणी विद्यालय की मुंबई में स्थापना** - 1953; **नाशिक में रानी लक्ष्मीबाई स्मारक की स्थापना** - 1958; रामायण प्रवचन के माध्यम से समिति कार्य का विस्तार; प्रार्थना केंद्र व उत्सव शाखा की शुरुआत की। नागपुर में **रानी लक्ष्मीबाई भजनी मांडला की स्थापना** - 1958; **नागपुर अहिल्या मंदिर की स्थापना** - 1964; **नाशिक में अधिकारी अभ्यास वर्ग** - 1966; **भगिनी निवेदिता जन्म शताब्दी के कार्यक्रम** सम्पूर्ण देश में हुए - 1967, **मुंबई में राजामाता जीजा माता ट्रस्ट की स्थापना** - 1969; **वर्धा में देवी अष्टभुजा मंदिर का निर्माण** - 1972; **जीजा माता 300वीं पुण्यतिथि के अवसर पर जीजा माता की जन्मस्थली पर उत्सव** - 1974, **इमरजेंसी में भी समिति कार्य यथावत** - 1975; ठाणे में जीजामाता ट्रस्ट में **अधिकारी अभ्यास वर्ग व कन्याकुमारी प्रवास** - 1976; स्वास्थ्य खराब - 1977; **देवलोकगमन** - 27 नवम्बर 1978

# शिक्षा वर्ग

इस वर्ष आयोजित किए गये शिक्षा वर्गों का विवरण निम्न प्रकार है –

**प्रारंभिक वर्ग** – 144 स्थानों पर आयोजित किये गये जिनमें कुल 10730 शिक्षार्थियों ने भाग लिया। शिक्षिकाओं की संख्या 685 और प्रबंधिकाओं की संख्या 1120 रही।

**प्रवेश वर्ग** – 36 स्थानों पर आयोजित किये गये जिनमें कुल 3342 शिक्षार्थियों ने भाग लिया। शिक्षिकाओं की संख्या 274 और प्रबंधिकाओं की संख्या 573 रही।

**प्रबोध वर्ग** – लगभग 12 स्थानों पर आयोजित किये गये जिनमें 582 शिक्षार्थियों नेभाग लिया। शिक्षिकाओं की संख्या 71 और प्रबंधिकाओं की संख्या 152 रही।

प्रारंभिक, प्रवेश, प्रबोध तीनों वर्ग मिलाकर लगभग कुल शिक्षार्थी संख्या 14654, शिक्षिकाएं 1030 एवं प्रबंधिकाएं 1845 रही। कुल 192 स्थानों पर वर्ग आयोजित किये गये।

**प्रवीण वर्ग** में 10 क्षेत्रों के 27 प्रांतों से आये हुए 59 शिक्षार्थी तथा नेपाल से 3, इस प्रकार कुल 62 शिक्षार्थी प्रतिभागी रहे।

## प्रवीण वर्ग

नागपुर में आयोजित प्रवीण वर्ग में 62 शिक्षार्थी उपस्थित रहे। इस बार विशेषता यह रही कि दायित्ववान कार्यकर्ता बहनों की संख्या अधिक थी। इस वर्ग में 8 प्रांत स्तर की, 17 विभाग स्तर की तथा 23 जिला स्तर की दायित्ववान कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण लिया। मा. प्रमुख कार्यवाहिका पूरे समय वर्ग में उपस्थित रहीं।

राष्ट्र के गौरवशाली अतीत, वर्तमान में हमारे समक्ष उपस्थित चुनौतियां और देश के उज्ज्वल भविष्य से जुड़े अनेकों विषयों पर शिक्षार्थियों को वैचारिक स्पष्टता और दृढ़ता प्रदान करते हुए समिति कार्य को वर्षों से तपस्या रूप में साध रहीं माननीय केंद्रीय अधिकारियों ने विषय रखे।

संगठन के आंतरिक विषयों के अतिरिक्त हमारा वैचारिक अधिष्ठान, हिंदुत्व एक वैज्ञानिक जीवन पद्धति, हिंदू चिंतन में महिला, शिवाजी सुराज, धन्य जननी भवेत्, राष्ट्र उत्थान के पंच प्रण, समान नागरिक संहिता, भारत का विश्व में बढ़ता गौरव इत्यादि विषय रखे गये।

'भारत एक सांस्कृतिक हिंदू राष्ट्र है' विषय पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबोले जी एवं 'हिन्दू जीवन धारा में तादात्म्य वनवासी जन जीवन' विषय पर वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय अतुल जोग जी का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

जीजामाता की 350वीं जयंती पर नागपुर महानगर द्वारा प्रस्तुत भावपूर्ण नाटिका तथा तरुणियों द्वारा 'राजनीति सर्वोपरि' विषय पर लघु नाटिका, पूर्ण गणवेश शाखा, मातृ हस्तेन भोजनम और व. प्रमुख संचालिका, मा. प्रमुख कार्यवाहिका एवं चारों अखिल भारतीय सह कार्यवाहिकाओं की उपस्थिति के साथ पथ संचलन भी वर्ग की विशेषता रहे।

समापन के अवसर पर वर्गाधिकरी डॉ. मंजु शर्मा ने वृत्त प्रस्तुत किया। मा. प्रमुख कार्यवाहिका जी के साथ डॉ. बी.आर. अंबेडकर नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, सोनीपत, हरियाणा की माननीय कुलपति डॉ. अर्चना मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने युवतियों को ऊर्जावान व सजग रहते हुए समाज कार्य करने के लिए प्रेरित किया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रमुख संचालिका जी का पाथेय प्राप्त हुआ।

### पाथेय वंदनीय प्रमुख संचालिका जी

आज प्रवीण वर्ग के समापन पर हम सभी परम पूजनीय डॉ जी और परम पूजनीय श्री गुरुजी की स्मृति स्थल पर एकत्रित हुए हैं जिन्होंने देश हित–राष्ट्र हित के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करते हुए राष्ट्र में एक संगठित शक्ति का निर्माण किया। आज ही के दिन 25 जून 1975 को भारत में आपातकाल का आदेश हुआ था। उस समय जागृत हिंदू समाज संगठित होकर इसके विरोध में खड़ा हो गया। 21 महीने के बाद उस आदेश को वापस लेना पड़ा, यह जागृत समाज की शक्ति थी।उस समय ऐसी परिस्थिति आ गई थी कि प्रजातंत्र का सर्वनाश हो चुका था लेकिन कई बार कुछ कारणवश अपना हिंदू समाज सुप्त अवस्था में आ जाता है और उसको जागृत करने का काम हमको करना पड़ता है। लेकिन आज बार–बार प्रश्न पूछ रहे हैं कि भारत में डेमोक्रेसी कहां हैं। ऋग्वेद में हमारे मनीषियों ने एक मंत्र दिया है –

**एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।**

सत्य एक है मगर ज्ञानी लोग उसको अलग–अलग रूप से देखते हैं। हमारे देश में हजारो–हजारों वर्षों से प्रजातंत्र है। अपने पुरातन ग्रंथों में है कि भारतीय सहजता से इस प्रजातंत्र को आचरण में लेकर आये हैं, यह भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

अपने हिंदू संस्कृति में पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों तथा अन्य पर्यावरण के घटकों के लिए सहजता से उनके संरक्षण की प्रेरणा दी है। ऐसे श्रेष्ठ सिद्धान्त से युक्त तेजस्वी हिंदू राष्ट्र का इसको ध्येय के रूप में राष्ट्र सेविका समिति ने स्वीकार किया है। अपनी प्रार्थना के माध्यम से भी हमें

प्रेरणा मिलती है। हम प्रार्थना में कहते हैं कि महिला सुशीला-सुधीरा-समर्था हो तभी वह समाज में और राष्ट्र में समर्थ व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है। ऐसे सुशील-सुधीर और समर्थ व्यक्तित्व निर्माण करने से ही हम राष्ट्र की तेजस्विता बढ़ा सकते हैं।

हमारी प्रार्थना में एक पंक्ति है -

**समुत्पादयास्मासु शक्तिं सुदिव्यामदुराचार-दुर्वृत्ति-विध्वंसिनीम्**

यहां हम विश्व शक्ति से दिव्य शक्ति की प्रार्थना करते हैं। ये दिव्य शक्ति दो प्रकार की होती है - अनुग्रह शक्ति और निग्रह शक्ति। अनुग्रह शक्ति में अपना सहज प्रेम, आत्मिकता है। इस शक्ति के माध्यम से हम सकारात्मक वातावरण निर्माण कर सकते हैं। इस शक्ति के माध्यम से हम श्रेष्ठ संतान का निर्माण कर सकते हैं। अपने भारत में ऐसे असंख्य उदाहरण हैं जैसे माँ जीजाबाई, स्वामी विवेकानंद जी की माँ भुवनेश्वरी देवी, बाल गंगाधर तिलक जी की माँ पार्वती देवी। ऐसी संकल्पित माताओं ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हमें ऐसी संतान दो जो अपनी भारत माता को परतंत्रता से मुक्त कराये। ऐसी पवित्र माताएं हमारे देश में हैं। उन्होंने केवल श्रेष्ठ संतान ही प्राप्त नहीं की अपितु उन्होंने उनको संस्कारित करते हुए अपनी क्षमता, अपनी बुद्धि, शक्ति, अपने गुणों को इस समाज, इस राष्ट्र को अर्पण किया।

निग्रह शक्ति भी दो प्रकार की होती है। पहली निग्रह शक्ति में अपने मन के ऊपर नियंत्रण होना। इस शक्ति के माध्यम से माताएं, बहनें अपने विचार व कामनाओं को नियंत्रित करते हुए अपने परिवार अपने समाज को भी प्रेरणा देती हैं। उदाहरण है पर्यावरण का उपयोग। पर्यावरण का उपयोग केवल अपने उपभोग के नहीं है अपितु सभी के लिए है। दूसरे प्रकार की निग्रह शक्ति में जहां भी कहीं अन्याय हो रहा हो उसका विरोध करना, उसके विरोध में खड़े होना। हमारे सामने कोई भी अन्याय हो रहा हो, अधर्म का कार्य हो रहा हो तो उसका विरोध करना। ऐसी निग्रह शक्ति हमारे अन्दर होनी चाहिए। इन अनुग्रह, निग्रह शक्ति का उपयोग दुराचार, दुर्वृति, विध्वंसनी में होना चाहिए।

हमारा समाज 'अहिंसा परमो धर्म' को मानने वाला है। हम किसी पर हिंसा करने के लिए नहीं जाते। उनमें सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए हम प्रयास करते हैं। कई बार दुष्टता का संहार करने के लिए हमें विध्वंसनी के रूप में भी कार्य करना पड़ सकता है। ऐसी भी हमें समाज में जागृति लेकर आना है। आज समिति के कार्यकर्ता कैसी भी कठिन परिस्थिति में चाहे वह मणिपुर का दंगाग्रस्त क्षेत्र हो, उड़ीसा में रेल दुर्घटना की परिस्थिति हो, कोरोना काल हो, हर आपातकालीन समय में समिति की सेविकाओं ने पीड़ितों की हर संभव सहायता की और ऐसी सेवा कार्य करने की शक्ति समिति की सेवा में इसी अनुग्रह और निग्रह शक्ति से प्राप्त होती है।

रशिया और यूक्रेन युद्ध के समय में भी पुणे से बेटी सचरिता कुलकर्णी, जो 23 वर्ष की आयु की थी, वहां पर फंसी थी। वहाँ गोलियां चल रही थी, उसके साथ एक जर्मन की बेटी भी थी, उस भारतीय बेटी ने उस हिंदू स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं को कहा कि मैं बड़ी हूँ मुझे यही रहने दो, इस लड़की को (इस जर्मन की बिटिया) को यहां से रेस्क्यू कर दो। जब उससे पूछा गया कि आपको ऐसी शक्ति, ऐसी प्रेरणा कहाँ से मिली तो उस बिटिया ने बताया कि हमारी संस्कृति का श्रेष्ठ सिद्धांत है 'वसुधैव कुटुम्बकम'। तो यह मेरी बहन ही हुई, इसका संरक्षण करना मेरी जिम्मेदारी है। ऐसे विचार सहजता से भारत के लोगों में है, रहते हैं। ऐसी श्रेष्ठ संस्कृति हिंदू संस्कृति है।

जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिली। इस वर्ष 180 देशों ने अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग को अपने जीवन का अंग बनाया। न्छ० में भी 150 देशों से आये प्रतिनिधियों ने योग दिवस पर योग में भाग लिया। ऐसा श्रेष्ठ नेतृत्व भारत में हैं। ऐसे श्रेष्ठ सिद्धान्त के कारण, श्रेष्ठ विचार के कारण, श्रेष्ठ संस्कृति के कारण विश्व को समझ आ रहा है कि भारत कैसा विचार करता है। भारत कैसे विश्वकल्याण की दृष्टि से विचार करता है, चिंता करता है। आज की तरुण पीढ़ी को सुशीला-सुधीरा-समर्था बनकर अपने-अपने कार्य क्षेत्र में कार्यरत होने की आवश्यकता है। आज आवश्यकता है तरुण पीढ़ी को भारतीय संस्कृति-भारतीय श्रेष्ठ परम्पराओं के बारे में जानकारी हो, ऐसे प्रयास करना ताकि वह भारतीय संस्कृति को अपने जीवन में ढाल सके।

आज एक अन्य विषय 'करियर विद करैक्टर' यानि हम अपने जीवन में कोई भी करियर का चयन कर सकते हैं लेकिन वह जीवन मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। ऐसा चरित्र अपने तरुण-तरुणियों के अंदर आना चाहिये। इस पर प्रयास करेंगे और अपनी संगठित शक्ति का नियमित शाखाओं के माध्यम से हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति पर स्वाभिमान जागृत करने का हम सब मिलकर प्रयास कर सकते हैं और करेंगे।

## प्रबोध एवं प्रवेश वर्ग की कुछ झलकियां

पश्चिम क्षेत्र, दादर, मुम्बई - प्रबोध एवं प्रवेश वर्ग

शिवाजी महाराज दुग्धाभिषेक
मध्य क्षेत्र, रायपुर, छत्तीसगढ़ - प्रबोध एवं प्रवेश वर्ग

वायव्य क्षेत्र, जोधपुर - प्रबोध एवं प्रवेश वर्ग

अवध प्रांत – प्रवेश वर्ग

अवध प्रांत – प्रवेश वर्ग

जोधपुर प्रांत – प्रबोध, प्रवेश वर्ग

जोधपुर प्रांत – प्रबोध, प्रवेश वर्ग

जयपुर प्रांत – प्रवेश वर्ग

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत – प्रवेश वर्ग

दिल्ली प्रांत – प्रबोध वर्ग

दिल्ली प्रांत – प्रबोध वर्ग

चित्तौड़ प्रांत – प्रवेश वर्ग

पंजाब प्रांत – प्रवेश वर्ग

हिसार प्रांत – प्रबोध, प्रवेश वर्ग

काशी एवं गोरक्ष प्रांत – प्रवेश वर्ग (मातृ हस्तेन भोजनम)

## संकल्प दिवस

राष्ट्र सेविका समिति, मेधाविनी सिन्धु सृजन, दिल्ली प्रान्त, शरण्या द्वारा दिनाँक 23 जून 2023 को राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका एवं आद्य संचालिका वन्दनीय लक्ष्मीबाई केलकर जी (मौसी जी) के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज में भव्य समारोह संकल्प दिवस के रूप में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता के रूप में माननीय सीता गायत्री जी (अ. भा. प्रमुख कार्यवाहिका, राष्ट्र सेविका समिति), मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री कृष्ण गोपाल जी (सह सरकार्यवाह, आर.एस.एस.), विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. बलराम पाणी जी (महाविद्यालयीन अधिष्ठाता, दिल्ली विश्वविद्यालय) तथा प्रो. प्रकाश सिंह जी (निदेशक, दक्षिणी परिसर, दि.वि.वि.) एवं अध्यक्ष के रूप में आदरणीय दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी विद्यमान रहे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तदोपरान्त कार्यक्रम की प्रस्तावना मेधाविनी सिन्धु सृजन दिल्ली प्रान्त की संयोजिका प्रो. निशा राणा जी ने रखी और मेधाविनी में प्रबुद्ध वर्ग द्वारा चलाये जा रहे कार्यों को विस्तार से बताया। साथ ही संक्षेप में मौसी जी के अवतरण दिवस पर उनके जीवन-सार की कुछ अनमोल स्मृतियों पर ध्यानाकर्षित कर राष्ट्र निर्माण एवं संरक्षण में उनके द्वारा दिए गये अतुलनीय योगदान के विषय में बताया।

इसके पश्चात् मुख्य अतिथि मा. श्री कृष्ण गोपाल जी, मुख्य वक्ता मा. सीता गायत्री जी, कार्यक्रम की अध्यक्ष आदरणीया दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने उद्बोधन में अपने विचारों को व्यक्त किया।

'हिन्दू प्रकाश में महिला विमर्श' विषयक कार्यक्रम में मंचस्थ विद्वानों द्वारा अत्यन्त ज्ञानवर्धक एवं लाभप्रद तथ्यों को सप्रमाण व्यक्त करते हुए आदरणीय मौसी जी के जीवन को समस्त जनमानस के लिए आदर्शमूलक व प्रेरणास्त्रोत के रूप में उपयुक्त प्रासंगिक एवं सारगर्भित वक्तव्य को सुनकर सभी सुधीजन लाभान्वित हुए। कार्यक्रम में

अतिथियों द्वारा मेधाविनी की वर्षिक पत्रिका का अनावरण किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली प्रान्त की कार्यवाहिका श्रीमती सुनीता भाटिया और शरण्या की अध्यक्षा श्रीमती अंजु आहूजा, दिल्ली प्रान्त प्रचारिका सुश्री विजया शर्मा जी के अतिरिक्त राष्ट्र सेविका समिति की सेविका बहनें, आर.एस.एस. के अधिकारी व कार्यकर्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, प्रोफेसर सहित लगभग 800 की संख्या में प्रबुद्ध बहनें व बंधु उपस्थित रहे।

## मंगल क्षण

जीजा माता सेवा न्यास हरियाणा की ओर से चिन्योट कॉलोनी, रोहतक में स्थित कैलाश सेवा धाम का लोकार्पण राष्ट्र सेविका समिति की वंदनीय प्रमुख संचालिका मा. शांता अक्का, प्रमुख कार्यवाहिका मा. सीता अन्नदानम्, विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय सह महामंत्री डा. सुरेन्द्र कुमार जैन, ट्रस्ट की अध्यक्षा चन्द्रकान्ता जी व अन्य के कर कमलों से हुआ।

लोकार्पण कार्यक्रम में सर्वप्रथम कैलाश सेवा धाम में स्थिति माँ भगवती अष्टभुजा की विधिवत पूजा अर्चना व कलश स्थापना की गई। तत्पश्चात बाबा बालकपुरी धाम में लोकार्पण कार्यक्रम में मा. शान्ता अक्का ने समाज में महिलाओं के योगदान के बारे में बताते हुए कहा कि भारतीय समाज का मूल स्वरूप समाज की महिला ही होती है। स्वर्गीय कैलाश माता जिन्होंने अपना निजि निवास समाजकार्य हेतु अपने जीवित रहते हुए दान कर दिया, उसका एक जीवन्त उदाहरण है। यह धाम विभिन्न क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण का कार्य करेगा। उन्होंने बताया तरुणियां बड़ी क्षमतावान हैं उन्हें केवल दिशा प्रदान करने की आवश्यकता है। उनमें सद्चरित्र निर्माण की आवश्यकता है। यह प्रेरणा बालक बालिका को माता से मिलती है।

इस अवसर पर विहिप के डॉ. सुरेन्द्र जैन ने एक वर्ष के अल्पकाल में चार मंजिल भवन को तैयार करने में सहायक आर्किटेक्ट, कंस्ट्रक्शन कमेटी, फाइनेंस कमेटी, मजदूरों को सम्मानित करवाया व माता जी के द्वारा समाज के लिए सर्वस्व अर्पण करने की वृत्ति को सबसे समक्ष रखा। तत्कालीन परिस्थितियों में समाज में ऐसे कार्य करने की उपयोगिता पर बल दिया। समाज को सहयोग करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में ट्रस्ट की सचिव डॉ. अंजलि जैन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए विश्वास जताया कि जीजामाता सेवा संचालित कैलाश सेवा धाम महिलाओं के सशक्तिकरण का अप्रतिम उदाहरण बनेगा।

अन्त में ट्रस्ट की अध्यक्षा चन्द्रकान्ता जी द्वारा सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस अवसर पर समाज के लगभग 300 गणमान्य बंधु भगिनी उपस्थित रहे।

## लक्ष्मी को शतवार वंदन

युग प्रवर्तक पथ प्रदर्शक, लक्ष्मी को शतवार वंदन
सेविकाओं के हृदय में शक्तिरूपा तुम चिरंतन।।धृ।।

नारी शक्ति को जगाने, धरती पर अवतार तेरा
पथ प्रदर्शित हो निरंतर, तिमिर हट जाये घनेरा
विश्व को मांगल्य देने, देह का कर सार्थ चन्दन
सेविकाओं के हृदय में... ।।1।।

मार्ग कंटकमय कठिन था, बंधनों की बेडियाँ थी
फिर भी अविचल चल सकेंगे, तेज की आभा प्रबल थी
संगठन का सूत्र लेकर, कर रही थी राष्ट्र अर्चन
सेविकाओं के हृदय में... ।।2।।

त्याग धृति तेजस्विता से, धैर्य से सामर्थ्य से नित
कर्मयोगिनी की तपस्या, राष्ट्र के कल्याण के हित
मधुर वाणी राम गाथा, मैथिली से शक्ति अर्जन
सेविकाओं के हृदय मे... ।।3।।

## वं. लक्ष्मीबाई केलकर (मौसी जी) के नाम पर चलने वाले ट्रस्ट

1. व. लक्ष्मीबाई केलकर स्मृति वाचनालय, वर्धा
2. व. लक्ष्मीबाई केलकर सेवा प्रतिष्ठान, अकोला
3. व. लक्ष्मीबाई स्मृति प्रतिष्ठान, चन्द्रपुर
4. व. मावशी स्मृति सेवा केलकर स्मारक समिति, नन्दूरबार
5. व. लक्ष्मीबाई केलकर स्मारक समिति, जबलपुर
6. व. लक्ष्मीबाई केलकर स्मारक समिति, कोलकाता
7. व. लक्ष्मीबाई केलकर स्मारक समिति, गुवाहाटी

**प्रत्येक राष्ट्र जो अपनी उन्नति चाहता है, उसे अपनी संस्कृति और इतिहास को कभी भूलना नहीं चाहिए क्योंकि भूतकालीन घटनाऐं, कृतियाँ ही भविष्यकाल के लिए प्रेरक होती हैं। भूतकालीन घटनायें ही भविष्य के लिए पथ प्रदर्शक बनती हैं।**

***व. मौसी जी***

## वन्दनीय मौसी जी से संबंधित साहित्य

### हिंदी –

1. दीपज्योति नमोस्तुते
2. वन्दनीय मौसी जी
3. कर्मयोगिनी वन्दनीय मौसीजी
4. अमृतबिंदु (वन्दनीय मौसीजी के लेखों का संकलन)
5. स्त्री – एक ऊर्जा केन्द्र
6. राष्ट्र सेविका समिति संस्थापिका वन्दनीय मौसी जी केलकर चित्रकथा
7. गीतलक्ष्मी (वन्दनीय मौसीजी के जीवन पर गीत एवं निवेदन)
8. पथ दर्शिनी श्री रामकथा हिन्दी, तमिल, तेलगु, कन्नड़, गुजराती
9. राष्ट्र सेविका अंक 1676 श्रद्धांजलि विशेषांक

### मराठी –

1. मुलींच्या मावशी
2. स्त्रीशक्ति चा साक्षात्कार
3. समिधा
4. युग परवर्तीका
5. वन्दनीय मावशी
6. राष्ट्र धर्माचे अद्यपिठ
7. दीपज्योति नमोस्तुते
8. राष्ट्र सेविका समिति संस्थापिका
9. वन्दनीय मौसी केलकर चित्रकथा
10. अमृतधारा (वन्दनीय मावशिच्या लेखाचे संकलन)
11. वन्दनीय मावशी केलकर रमायनावरिल प्रवर्चने
12. गीतलक्ष्मी – वन्दनीय मावशिच्या जिवनावर निवेदन व गिते
13. यज्ञशिखा
14. राष्ट्र सेविका अंक 1676 श्रद्धांजलि विशेषांक
15. राष्ट्र सेविका अंक 2005 – वन्दनीय मावशी जन्मशताब्दी विशेषांक
16. राष्ट्र सेविका अंक 2004 रामायण विशेषांक

### अंग्रेजी पुस्तकें –

1. Life Sketch of V. Mousiji
2. Founder of Rashtra Sevika Samiti
3. Vandaniya Mavashi Kelkar Chitra katha.